४. शौर्य

– भूषण

पूरक पठन

छूटत कमान और तीन गोली बानन के,
मुसकिल होति मोरचान हू की ओट मैं ।।
ता समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कियो,
दाबा बांधि परो हल्ला बीर भट जोट मैं ।
'भूषन' भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौं
किम्मति इहाँ लगि जाकी भट झोट मैं ।
ताव दै-दै मूंछन, कंगूरन पै पाँव दै-दै,
अरि मुख घाव दै-दै, कूदि परैं कोट मैं ।।१।।

साजी चतुरंग सैन, रंग में तुरंग चढ़ि,
सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत है ।
भूखन भनत, नाद बेहद नगारन के,
नदी-नद मद गैवरन के रलत है ।
ऐल-फैल, खैल-भैल खलक में गैल-गैल,
गजन की ठेल-पेल सैल उसलत है ।।
तारा-सो तरनि धूरि-धरा में लगत जिमि
थारा पर पारा, पारावार यों हलत है ।

परिचय

जन्म : १६१३ ई तिकवांपुर, कानपुर (उ.प्र)
मृत्यु : १७०५
परिचय : हिंदी साहित्य में भूषण का विशिष्ट स्थान है। वे वीररस के अद्‌वितीय कवि थे । रीतिकालीन कवियों में वे पहले कवि थे जिन्होंने हास-विलास की अपेक्षा राष्ट्रीय भावना को प्रमुखता दी । आपकी रचनाओं में शिवाजी महाराज और छत्रसाल के शौर्य-साहस, प्रभाव-पराक्रम, तेज और ओज का सजीव वर्णन हुआ है। आपने कवित्त और सवैया छंद का प्रमुख रुप से प्रयोग किया है।
प्रमुख कृतियाँ : शिवराज भूषण, शिवा बावनी और छत्रसाल दशक (काव्यसंग्रह)

पद्‌य संबंधी

कवित्त : यह वार्णिक छंद है । इसे घनाक्षरी छंद भी कहते हैं । इस छंद में ओजपूर्ण भावों की अभिव्यक्ति सफलता के साथ होती है ।

प्रस्तुत कवित्त में छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता का वर्णन विविध रूपों में किया गया है । उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने का सार्थक प्रयास किया गया है ।

alokshukla.com/Blog/OnLineBook.aspx?P95

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर
दावा नाग जूह पर सिंह सिरताज को
दावा पुरहूत को पहारन के कूल पर
दावा सब पच्छिन के गोल पर बाज को
भूषण अखंड नव खंड महि मंडल में
रवि को दावा जैसे रवि किरन समाज पे
पूरब-पछांह देश दच्छिन ते उत्तर लौं
जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को ।

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहन वारी
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती है ।
कंद मूल भोग करैं, कंद मूल भोग करैं,
तीन बेर खातीं, ते वे तीन बेर खाती हैं ।।
भूषण शिथिल अंग, भूषन शिथिल अंग,
बिजन डुलाती ते वे बिजन डुलाती हैं ।
'भूषन' भनत सिवराज बीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वे नगन जड़ाती हैं ।।

—०—

('शिवा बावनी' से)

पठनीय

हिंदी उपन्यास 'श्रीमान योगी' का अंश पढ़िए । 'क्रांतिदिन' के समारोह में प्रस्तुत कीजिए ।

संभाषणीय

कवि कुसुमाग्रज लिखित 'गर्जा महाराष्ट्र माझा' यह गीत समूह में प्रस्तुत कीजिए ।

लेखनीय

महाराष्ट्र के समाजसेवियों के नामों तथा उनके कार्यों की सूची बनाइए ।

श्रवणीय

छत्रपति शिवाजी महाराज के शौर्य संबंधी वीररस पूर्ण पोवाड़ा सुनिए ।

आसपास

महाराष्ट्र के प्रमुख गढ़-किलों की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'भारत भूमि, वीरों की भूमि' इस विचार को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

शब्द संसार

मोरचा (पुं.फा.) = युद्‌ध में आमना-सामना
साजी (क्रि.) = सजाकर
भनत (क्रि.) = कहते हैं
रलत (क्रि.) = मिलना, पूर्ण होना
तरनि (स्त्री.सं.) = नाव, तरौना
पारावार (पुं.सं.) = आर-पार, दोनों तट; सीमा
पुरहूत (पुं.सं.) = इंद्र
पातसाही (पुं.फा.) = बादशाही
मंदर (पुं.सं.) = स्वर्ग, पहाड़
बिजन (पुं.सं.) = पंखा, अकेले
खलक (पुं.अ.) = संसार, लोक

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल पूर्ण कीजिए :

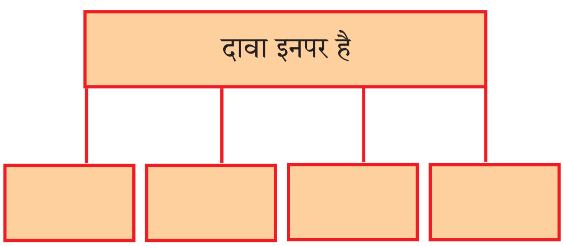

(ख) पद्‌य में प्रयुक्त दिशाएँ :

१. ------------ २. ------------

(ग) दिए गए शब्द के वर्णों का उपयोग करके छह अर्थपूर्ण शब्द तैयार कीजिए :

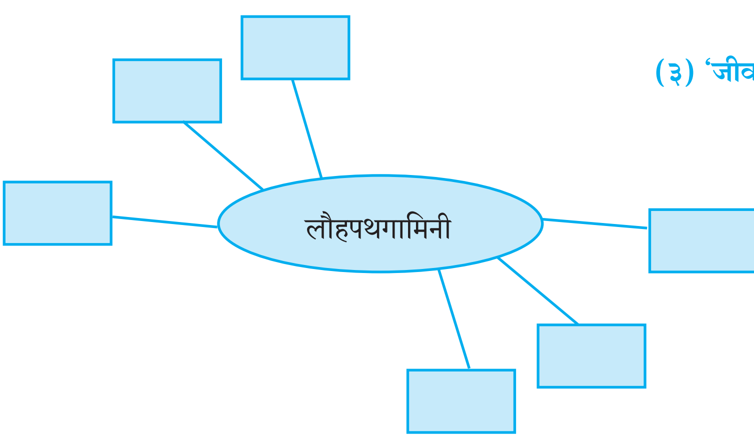

पाठ से आगे

'हमें अपने इतिहास पर गर्व है' इसपर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

(२) पाठ से बीस शब्द लेकर उन्हें वर्णक्रमानुसार लिखिए ।

(३) 'जीवन में साहस जरूरी है ', इसपर अपने विचार लिखिए ।

रचना बोध

....
....
....